



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

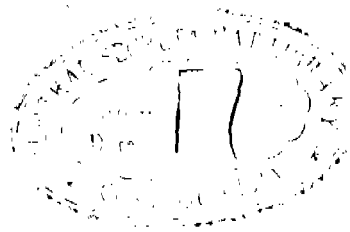
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 221]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अगस्त 8, 1975/श्रावण 17, 1897

No. 221]

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 8, 1975/SRAVANA 17, 1897

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed  
as a separate compilation

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

NOTIFICATIONS

CENTRAL EXCISES

New Delhi, the 8th August 1975

G.S.R. 439(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of Section 1 of the Central Excises and Salt (Amendment) Act 1973 (22 of 1973), the Central Government hereby appoints the 1st October, 1975 as the date on which Section 2 of the said Act shall come into force.

[No. 176/75-CE/F. No. 312/1/75-CX-10]

वित्त मंत्रालय

(राजस्व और बीमा विभाग)

अधिसूचनाएं

केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

नई दिल्ली, 8 अगस्त, 1975

सा० का० नि० 439(अ).— केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1973 (1973 का 22) की धारा 1 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार

1975 के अक्टूबर मास के प्रथम दिन को उस तारीख के रूप में नियत करती है जिसको उक्त अधिनियम की धारा 2 प्रवृत्त होगी।

[सं० 176/75-सी०ई०/फा० सं० 312/1/75-उ०शु०-10]

**G.S.R. 440(E).**—In exercise of the powers conferred by Section 37 of the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

#### CHAPTER I—Preliminary

1. (1) These rules may be called the Central Excise (Valuation) Rules, 1975.
- (2) They shall come into force on the 1st October, 1975.
2. In these rules, unless the context otherwise requires,—
  - (a) 'Act' means the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944);
  - (b) 'proper officer' means the proper officer as defined in clause (xi) of rule 2 of the Central Excise Rules, 1944;
  - (c) 'value' means the value under Section 4 of the Act;
  - (d) words and expressions used in these rules and not defined but defined in the Act shall have the meanings respectively assigned to them in the Act.

#### CHAPTER II—Determination of value

3. The value of any excisable goods shall, for the purposes of clause (b) of sub-section (1) of Section 4 of the Act, be determined by the proper officer in accordance with these rules.

4. The value of the excisable goods shall be based on the value of such goods sold by the assessee for delivery at any other time nearest to the time of the removal or the goods under assessment, subject, if necessary, to such adjustment on account of the difference in the dates of delivery of such goods and of the excisable goods under assessment, as may appear reasonable to the proper officer.

5. Where the excisable goods are sold in the circumstances specified in clause (a) of sub-section (1) of Section 4 of the Act except that the price is not the sole consideration, the value of such goods shall be based on the aggregate of such price and the amount of the money value of any additional consideration flowing directly or indirectly from the buyer to the assessee.

6. If the value of the excisable goods under assessment cannot be determined under rule 4 or rule 5, and—

- (a) where such goods are sold by the assessee in retail, the value shall be based on the retail price of such goods reduced by such amount as is necessary and reasonable in the opinion of the proper officer to arrive at the price at which the assessee would have sold such goods in the course of wholesale trade to a person other than a related person :

Provided that in respect of the excisable goods specified in column 2 of the Schedule appended to these rules, the retail price thereof referred to in that column shall be reduced by the amount determined on the basis of the percentage as specified in the corresponding entry in column 3 of the said Schedule :

Provided further that in determining the amount of reduction or for specifying the percentage, due regard shall be had to the nature of the excisable goods, the trade practice in that commodity and other relevant factors;

- (b) where the excisable goods are not sold by the assessee but are used or consumed by him or on his behalf in the production or manufacture of other articles, the value shall be based—

- (i) on the value of the comparable goods produced or manufactured by the assessee or by any other assessee :

Provided that in determining the value under this sub-clause the proper officer shall make such adjustments as appear to him reasonable, taking into

consideration all relevant factors and, in particular, the difference, if any, in the material characteristics of the goods to be assessed and of the comparable goods;

- (ii) if the value cannot be determined under sub-clause (i), on the cost of production or manufacture, including profits, if any, which the assessee would have normally earned on the sale of such goods;
- (c) where the assessee so arranges that the excisable goods are generally not sold by him in the course of wholesale trade except to or through a related person and the value cannot be determined under clause (iii) of the proviso to clause (a) of sub-section (1) of Section 4 of the Act, value of the goods so sold shall be determined—
  - (i) in a case where the assessee sells the goods to a related person who sells such goods in retail, in the manner specified in clause (a) of this rule;
  - (ii) in a case where a related person does not sell the goods but uses or consumes such goods in the production or manufacture of other articles, in the manner specified in clause (b) of this rule;
  - (iii) in a case where a related person sells the goods in the course of wholesale trade to buyers, other than dealers and related persons, and the class to which such buyers belong is known at the time of removal, on the basis of the price at which the goods are ordinarily sold by the related person to such class of buyers.

7. If the value of excisable goods cannot be determined under the foregoing rules, the proper officer shall determine the value of such goods according to the best of his judgment, and for this purpose he may have regard, among other things, to any one or more of the methods provided for in the foregoing rules.

#### THE SCHEDULE

[See Rule 6(a)]

Item of the first Schedule of the Central Excises and Salt Act, 1944	Description of excisable goods	Reduction to be made from the retail price of the goods referred to in column 2.
1	2	3
14-E . . . . .	Patent or Proprietary Medicines in respect of which the retail price is specified in the price list under paragraph 8 of the Drugs (Prices) Control Order, made under section 3 of the Essential Commodities Act, 1955 (10 of 1955).	25% of the retail price.

[No. 177/75-CE/F. No. 312/1/75-CX-10]

J. BANERJEE, Addl. Secy.

सा० का० नि० 440(अ).—केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 37 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

#### अध्याय 1—आरम्भिक

1. (1) इन नियमों का नाम केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क (मूल्यांकन) नियम, 1975 है।
- (2) ये 1 अक्तूबर, 1975 को प्रवृत्त होंगे।

2. इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

- (क) “अधिनियम” से केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) अभिप्रेत है;
- (ख) “समुचित अधिकारी” से केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 2 के खण्ड (XI) में यथा परिभाषित समुचित अधिकारी अभिप्रेत है;
- (ग) “मूल्य” से अधिनियम की धारा 4 के अधीन मूल्य अभिप्रेत है;
- (घ) इन नियमों में प्रयुक्त किन्तु अपरिभाषित ऐसे शब्दों और पदों का जो अधिनियम में परिभाषित हैं वही अर्थ है जो अधिनियम में क्रमशः उनका है।

### अध्याय 2—मूल्य अवधारण

3. अधिनियम की धारा 4 के उपखण्ड (1) के खण्ड (ख) के प्रयोजनों के लिये, उत्पाद-शुल्क्य माल का मूल्य समुचित अधिकारी द्वारा इन नियमों के अनुसार अवधारित किया जाएगा।

4. उत्पाद-शुल्क माल का मूल्य निर्धारिती द्वारा निर्धारण गत माल के हटाने के समय के निकटतम किसी अन्य समय पर परिदान के लिए बेचे गए माल के मूल्य पर आधारित होगा तथा ऐसा करने में समुचित अधिकारी ऐसा समायोजन, जो आवश्यक हो, करेगा, जो ऐसे माल के और निर्धारणगत उत्पाद-शुल्क्य माल के परिदान की तारीख में अन्तर के कारण उसे युक्तियुक्त पतीत हो।

5. जहां उत्पाद-शुल्क माल अधिनियम की धारा 4 की उपधारा (1) के खण्ड (क) में विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में बेचा जाए वहां, सिवाय उस दशा में जब कीमत ही एकमात्र प्रतिफल नहीं है, ऐसे माल का मूल्य ऐसी कीमत और निर्धारिती को क्रेता की ओर से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिलने वाले किसी अतिरिक्त प्रतिफल के धनीय मूल्य की रकम, दोनों की कुल राशि पर, आधारित होगा।

6. यदि निर्धारणगत उत्पाद-शुल्क्य माल का मूल्य नियम 4 अथवा नियम 5 के अधीन अवधारित नहीं किया जा सकता, और

- (क) जहां ऐसा माल निर्धारिती द्वारा फुटकर में बेचा जाए वहां ऐसे माल का मूल्य उसकी फुटकर कीमत पर, उसमें से उतनी रकम कम करके जो समुचित अधिकारी की राय में वह कीमत निकालने के लिये आवश्यक और समुचित हो जिस पर निर्धारिती ऐसे माल को थोक व्यापार के दौरान सम्बद्ध व्यक्ति से भिन्न किसी व्यक्ति को बेच देता, आधारित होगा :

परन्तु इन नियमों से उपाबद्ध अनुसूची के स्तम्भ 2 में विनिर्दिष्ट उत्पाद-शुल्क माल की वावत उस स्तम्भ में दी गई उसकी फुटकर कीमत में से उतनी रकम कम कर दी जाएगी जो उक्त अनुसूची में स्तम्भ 3 में तत्सम्बन्धी प्रविष्टि में दिए गए प्रतिशत के आधार पर अवधारित की जाए :

परन्तु यह और कि कम की जाने वाली रकम का अवधारण करने में अथवा प्रतिशत विनिर्दिष्ट करने में उत्पाद-शुल्क्य माल की प्रकृति, उस वस्तु के सम्बन्ध में व्यापारिक रुढ़ि और अन्य सुसंगत बातों का सम्यक् ध्यान रखा जाएगा;

(ख) जहाँ उत्पाद-शुल्क माल निर्धारिती द्वारा नहीं बेचा जाता हो बल्कि उसके द्वारा या उसकी ओर से अन्य सामानों के उत्पादन या विनिर्माण में प्रयोग में लाया जाता हो या इस्तेमाल किया जाता हो वहाँ मूल्य—

(i) निर्धारिती द्वारा अथवा किसी अन्य निर्धारिती द्वारा उत्पादित या विनिर्मित समतुल्य माल के मूल्य पर आधारित होगा :

परन्तु इस उपखण्ड के अन्तर्गत मूल्य अवधारण करने में समुचित अधिकाारी ऐसे समायोजन करेगा जैसे कि उसे, सभी सुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए, और विशिष्टतया, निर्धारण किए जाने वाले माल तथा समतुल्य माल की महत्वपूर्ण विशेषताओं में अन्तर, यदि कोई हो, को ध्यान में रखते हुए, युक्ति-युक्त प्रतीत हो ;

(ii) यदि उपखण्ड (i) के अधीन मूल्य का अवधारण नहीं किया जा सकता हो तो मूल्य ऐसे माल के उत्पादन या विनिर्माण के खर्च पर, जिसमें वह लाभ भी, यदि कोई हो, सम्मिलित है जो निर्धारिती ऐसे माल की बिक्री पर सामान्यतया अर्जित करता, आधारित होगा ;

(ग) जहाँ निर्धारिती ऐसी व्यवस्था करता है कि उत्पाद-शुल्क माल साधारणतया उसके द्वारा थोक व्यापार के दौरान, सम्बद्ध व्यक्ति को या उसके माध्यम से बेचे जाने के सिवाय, नहीं बेचे जाते हैं और मूल्य का अवधारण अधिनियम की धारा 4 की उपधारा (1) के खण्ड (क) के परन्तुक के खण्ड (iii) के अधीन नहीं किया जा सकता, वहाँ इस प्रकार बेचे गए माल का मूल्य निम्नलिखित प्रकार से अवधारित होगा :—

(i) जहाँ निर्धारिती माल की बिक्री सम्बद्ध व्यक्ति को करता है जो कि ऐसे माल की बिक्री फुटकर में करता है, वहाँ इस नियम के खण्ड (क) में विनिर्दिष्ट रीति से ;

(ii) जहाँ सम्बद्ध व्यक्ति माल की बिक्री नहीं करता है, बल्कि उस माल का प्रयोग या इस्तेमाल अन्य वस्तुओं के उत्पादन या विनिर्माण में करता है, वहाँ इस नियम के खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट रीति से ;

(iii) जहाँ सम्बद्ध व्यक्ति माल की बिक्री थोक व्यापार के दौरान व्यवहारियों तथा सम्बद्ध व्यक्तियों से भिन्न क्रेताओं को करता है, तथा वह वर्ग जिसमें ऐसे क्रेता आते हैं, माल के हटाए जाने के समय ज्ञात है, वहाँ उस कीमत के आधार पर जिस पर माल सामान्यतया सम्बन्धित व्यक्ति द्वारा विक्रेताओं के ऐसे वर्ग को बेचा जाता है ।

7. यदि उत्पादक-शुल्क माल के मूल्य का अवधारण उपरोक्त नियमों के अन्तर्गत नहीं किया जा सकता तो समुचित अधिकारी ऐसे माल का मूल्य अपने सर्वोत्तम निर्णय के अनुसार अवधारित करेगा, और इस प्रयोजन के लिए वह अन्य बातों के साथ-साथ उपरोक्त नियमों में उपबन्धित किसी एक अथवा अधिक पद्धतियों को ध्यान में रखेगा ।

## घनसूची

## [नियम 6 (क) देखिए]

केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क घोर तमक अधिनियम, 1944 की प्रथम घन- सूची की मद	उत्पाद-शुल्कय माल का विवरण	स्तम्भ 2 में निर्दिष्ट माल की फुटकर कीमत में से की जाने वाली कमी
1	2	3
14-४०]	पेटेंट या स्वामित्वाधीन औषधियाँ जिनकी फुटकर कीमत आवश्यकत वस्तु अधिनियम, 1955 (1955 का 10) की धारा 3 के अधीन बनाए गए औषधि (कीमत) नियंत्रण आदेश के पैरा 8 के अधीन मूल्य सूची में दी गई है।	फुटकर कीमत का पच्चीस प्रतिशत।

[सं० 177/75-सी०ई०/फा०सं० 312/1/75-उ०शु०-10]

जे० बनर्जी, अपर सचिव।